

धार्मिक क्षेत्र में अपवित्र होने अथवा अपवित्र वस्तु छूने पर लगने वाला दोष 5. यह धारणा कि अमुक वस्तु या व्यक्ति छूने अथवा उससे छूए जाने पर हम अपवित्र हो जायेंगे 6. व्यक्ति पर पड़ने वाली भूत-प्रेत आदि की छाया या उससे होने वाली बाधा मुहा. छूत झाड़ना-प्रेत बाधा दूर करना।

छूत-छात स्त्री. (देश.) स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव, छुआछूत।

छूना स.क्रि. (देश.) 1. उँगलियों या हाथ से किसी वस्तु या व्यक्ति को अथवा उसके तल का कोई अंश स्पर्श करना मुहा. आकाश-छूना- बहुत ऊँचा होना 2. शरीर के किसी अंग का अथवा पहने हुए किसी वस्त्र का किसी से लगना या स्पर्श करना 3. दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना जैसे- चावल छूकर भिखमंगे को बाँटना 4. ऐसा काम करना जिससे किसी चीज में गति उत्पन्न हो जैसे- हृदय के तार छूना 5. किसी विषय के संबंध में कुछ कहना या लिखना जैसे- इस विषय को भी उन्होंने छुआ है 6. लीपना, पोतना जैसे- कमरा छूना।

छेंक स्त्री. (देश.) 1. छेंकने की क्रिया या भाव 2. रोक पुं. छेद।

छेंकन स्त्री. (देश.) 1. छेंकने की क्रिया या भाव 2. वास्तु कला में, मकान आदि बनाने से पहले उसके भूमि-तल के संबंध में यह निश्चय या स्थिर करना कि आँगन, कोठरियाँ, बैठक, रसोई आदि विभाग कहाँ-कहाँ रहेंगे जैसे- इस मकान की छेंकन बहुत अच्छी हुई है।

छेंकना स.क्रि. (देश.) 1. स्थान घेरना 2. विभाग आदि करने के लिए लकीरों से अवकाश घेरना 3. जाने वाले के सामने खड़े होकर उसे जाने से रोकना 4. किसी का मार्ग अवरुद्ध करना, मिटाना 5. किसी के नाम लिखी हुई चीज या रकम लौट आने पर काट कर रद्द करना।

छेक पुं. (देश.) छेद (पश्चिम) पुं. (देश.) 1. पालतू पशु-पक्षी 2. शब्दालंकार का एक भेद, छेकानुप्रास, वि. 1. पालतू 2. नागरिक।

छेकानुप्रास पुं. (तत्.) कवित्त में एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक हीचरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अंतर पर होती है।

छेकापहनुति स्त्री. (तत्.) साहित्य में अपहृति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी से कही जाने वाली कोई भेद की बात किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है, 'कह मुकरी' या मुकरी में यही अलंकार होता है।

छेकोक्ति स्त्री. (तत्.) साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सिद्ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड़ स्त्री. (देश.) 1. छेड़ने की क्रिया या भाव 2. ऐसा शब्द, पद या बात जिसके कहने से कोई चिढ़ जाता हो, चिढ़ाने वाली बात 3. दे. चिढ़ोनी 4. झगड़ा 5. किसी कार्य का आरंभ श्री गणेश 6. अपनी ओर से कोई ऐसी बात आरंभ करना कि उसका उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर आता हो, पहल उदा. हम तो चुपचाप बैठे थे, छेड़ तो तुम्हीं ने की मुहा. छेड़ निकालना- उक्त प्रकार से कोई ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध खड़ा हो सकता हो।

छेड़खानी स्त्री. (देश.) छेड़-छाड़।

छेड़छाड़ स्त्री. (अनु.) 1. किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव 2. अनुचित रूप से किसी के प्रति आरंभ किया जाने वाला व्यवहार।

छेड़ना स.क्रि. (देश.) 1. इस प्रकार छूना या स्पर्श करना कि उसके फलस्वरूप कोई क्रिया या व्यापार घटित हो जैसे- बीन या सितार के तार छेड़ना 2. जीव जन्तुओं आदि को इस प्रकार स्पर्श करना या उन्हें तंग करना जिससे वे क्षुब्ध होकर आक्रमण कर कसते हों जैसे- कुत्ते, साँड़ या साँप को छेड़ना 3. व्यक्ति को चिढ़ाने या तंग करने के लिए हँसी-ठट्टे के रूप में कोई ऐसी बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे वह चिढ़ या दुःखी होकर प्रतिकार कर सकता हो